गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत... 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
25 नवम्बर से
1 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय
92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

हिन्दू धर्म में श्रीयंत्र सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन यंत्र है, श्रीयंत्र की आराध्या देवी स्वयं श्रीविद्या अर्थात त्रिपुर सुन्दरी देवी हैं, श्रीयंत्र को देवीके ही रूप में मान्यता दिगई है।

श्रीयंत्र को अत्याधिक शक्तिशाली व ललितादेवी का पूजन चक्र माना जाता है, श्रीयंत्र को त्रैलोक्य मोहन अर्थात तीनों लोकों का मोहन करने वाला यन्त्र भी कहां जाता है।

श्रीयंत्र में सर्व रक्षाकारी, सर्वकष्टनाशक, सर्वव्याधि-निवारक विशेष गुण होने के कारण श्रीयंत्र को सर्व सिद्धिप्रद एवं सर्व सौभाग्य दायक माना जाता है।

श्रीयंत्र को सरल शब्दों में लक्ष्मी यंत्र कहा जाता हैं, क्योकि श्रीयंत्र को धन के आगमन हेतु सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया हैं।

विद्वानों का कथन हैं की श्रीयंत्र अलौकिक शक्तियों व चमत्कारी शक्तियों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है।

श्रीयंत्र को सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। यहीं कारण हैं, कि श्रीयंत्र को यंत्रराज, यंत्र शिरोमणि भी कहा जाता है।

पौराणिक धर्मग्रंथों में वर्णित हैं की श्री यंत्र आदिकालीन विद्या का द्योतक हैं, भारतवर्ष में प्राचीनकाल में भी वास्तुकला अत्यन्त समृद्व थी। और आज के आधुनिक युग में प्रायः हर मनुष्य वास्तु के माध्यम से भी प्रकार के सुख प्राप्त करना चाहता है। उनके लिए श्रीयंत्र की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्योकि जानकारों का मानना हैं की श्री यंत्र में ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति और विकास का रहस्य छिपा हैं।

विद्वानो के मतानुशार श्रीयंत्र में श्री शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की गई हैं **"श्रयत या सा श्री"** अर्थात जो श्रवण की जाये, वह श्री हैं। नित्य परब्रहमा से आश्रयण प्राप्त करती हो, वह श्री हैं।

श्रीचक्र से संबंधित मत मे शंकराचार्या कृत आनन्द सौदर्य लहरी में वर्णित हैं

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव्युवतिभिः पञ्चभिरपि.प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।

त्रश्रयश्चत्वारिंशदसुदलकलात्रिवलय-.त्रिरेखाभिः सार्धं तव कोणाः परिणताः ।

श्रीयंत्र का विषय अत्यन्त गहन हैं, लेकिन यहाँ हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इसका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं। विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में श्री यंत्र के विषय में जितना वर्णन मिलता हैं उतना और किसी विषय पर नहीं मिलता!

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा

आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

श्रीयंत्र की महिमा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु धर्म में श्रीयंत्र सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन यंत्र है, श्रीयंत्र की आराध्या देवी स्वयं श्रीविद्या अर्थात त्रिपुर सुन्दरी देवी हैं, श्रीयंत्र को देवीके ही रूप में मान्यता दिगई है।

श्रीयंत्र को अत्याधिक शक्तिशाली व ललितादेवी का पूजन चक्र माना जाता है, श्रीयंत्र को त्रैलोक्य मोहन अर्थात तीनों लोकों का मोहन करने वाला यन्त्र भी कहां जाता है।

श्रीयंत्र में सर्व रक्षाकारी, सर्वकष्टनाशक, सर्वव्याधि-निवारक विशेष गुण होने के कारण श्रीयंत्र को सर्व सिद्धिप्रद एवं सर्व सौभाग्य दायक माना जाता है।

श्रीयंत्र को सरल शब्दों में लक्ष्मी यंत्र कहा जाता हैं, क्योकि श्रीयंत्र को धन के आगमन हेतु सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया हैं।

विद्वानों का कथन हैं की श्रीयंत्र अलौकिक शक्तियों व चमत्कारी शक्तियों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है।

श्रीयंत्र को सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। यहीं कारण हैं, कि श्रीयंत्र को यंत्रराज, यंत्र शिरोमणि भी कहा जाता है।

श्रीयंत्र से जुडी पौराणिक कथा

धर्मग्रंथों में श्री यंत्र के संदर्भ में एक प्रचलित कथा का वर्णन मिलता है।

कथाके अनुसार एक बार आदिगुरु शंकराचार्यजी ने कैलाश पर भगवान शिवजी को कठिन तपस्या द्वारा प्रसन्न कर लिया। भगवान भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर शंकराचार्यजी से वर मांगने के लिए कहा। आदिगुरु शंकराचार्यजी ने शिवजी से विश्व कल्याण का उपाय पूछा। पूछे गये प्रश्न पर भगवान भोलेनाथ ने स्वयं शंकराचार्य को साक्षात लक्ष्मी स्वरूप श्री यंत्र की विस्तृत महिमा बताई और कहा यह श्री यंत्र मनुष्यों का सभी प्रकार से कल्याण करेगा।

श्री यंत्र परम ब्रह्म स्वरूपी आदि देवी भगवती महात्रिपुर सुंदरी की उपासना का सर्वश्रेष्ठ यंत्र है क्योंकि श्री चक्र ही देवीका निवास स्थल है। श्री यंत्र में देवी स्वयं विराजमान होती हैं इसीलिए श्री यंत्र विश्व का कल्याण करने वाला है।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है, एसी स्थिति में यदि मनुष्य पूर्ण श्रद्धाभाव और विश्वास से श्रीयंत्र की स्थापना करें तो यह यंत्र उसके लिए चमत्कारी सिद्व हो सकता है।

मंत्र सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित श्री यंत्र को कोई भी मनुष्य चाहे वह धनवान हो या निर्धन वहँ अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर स्थापित कर सकता हैं। विद्वानो का अनुभव हैं की श्रीयंत्र का प्रतिदन पूजन करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है और मनुष्य का सभी प्रकार से मंगल करती हैं। मां महालक्ष्मी की कृपा से मनुष्य दिन प्रतिदिन सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य को प्राप्त कर आनंदमय जीवन व्यतीत करता हैं।

पौराणिक धर्मग्रंथों में वर्णित हैं की श्री यंत्र आदिकालीन विद्या का द्योतक हैं, भारतवर्ष में प्राचीनकाल में भी वास्तुकला अत्यन्त समृद्व थी। और आज के आधुनिक युग में प्रायः हर मनुष्य वास्तु के माध्यम से भी प्रकार के सुख प्राप्त करना चाहता है। उनके लिए श्रीयंत्र की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्योकि जानकारों का मानना हैं की श्री यंत्र में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विकास का रहस्य छिपा हैं।

विद्वानो के मतानुशार श्रीयंत्र में श्री शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की गई हैं **"श्रयत या सा श्री"** अर्थात जो श्रवण की जाये, वह श्री हैं। नित्य परब्रह्मा से आश्रयण प्राप्त करती हो, वह श्री हैं।

श्रीयंत्र का अन्य अर्थ हैं श्री का यंत्र। यंत्र शब्द "यम" धातु का घोतक हैं। (यम धातु से बना हैं)

यन्त्र शब्द गृह शब्द को प्रकट करता हैं। जिस प्रकार गृह में सब वस्तुओं का नियंत्रण होता हैं उसी प्रकार श्रीयंत्र को प्राप्त करने या नियंत्रित करने के लिए श्रीयंत्र सर्वश्रेष्ठ माध्य हैं।

प्रायः सभी लोगोने अपने दैनिक जीवन में अनेक बार देखा होगा की किसी श्रेष्ठ एवं पूज्य मनुष्यों के नाम के आगे लोग "श्री" शब्द का प्रयोग करते हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता के अनुक्रम के अनुशार उनकी नामके आगे 3, 4, 5, 8 बार तक "श्री" शब्द प्रयोग का शास्त्रों में उल्लेख मिला हैं। प्रधान पीठाधिश्वर/पीठाधिपति अथवा किसी संप्रदाय विशेष के प्रधानाचार्यों के नाम के आगे या पीछे 1008 बार तक "श्री" का प्रयोग किया जाता हैं। क्योकि "श्री" शब्द का सरल अर्थ "लक्ष्मी" होता हैं।

लेकिन विभिन्न धर्मग्रंथों में "श्री" शब्द का अर्थ महात्रिपुरसुन्दरी होने का उल्लेख मिलता हैं। **कुछ धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों में वर्णित हैं की "श्री महालक्ष्मी" ने महात्रिपुरसुन्दरी की चिरकाल आराधना करके उसने अनेक वरदान प्राप्त किये हैं। लक्ष्मीजी को प्राप्त इन्हीं वरदानों से एक वरदान "श्री" शब्द से ख्याति प्राप्त करने का भी प्राप्त हुवा। तभी से श्री शब्द का अर्थ लक्ष्मी समझा जाने लगा!

** धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों का संदर्भ हरितयनसंहिता, ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड इत्यादि।

श्रीचक्र से संबंधित मत शंकराचार्या कृत आनन्द सौंदर्य लहरी में वर्णित हैं

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव्युवतिभिः पञ्चभिरपि.
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रश्रयश्चत्वारिंशदसुदलकलात्रिवलय-.
त्रिरेखाभिः सार्धं तव कोणाः परिणताः ।

श्रीयंत्र का विषय अत्यन्त गहन हैं, लेकिन यहाँ हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इसका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं।

विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में श्री यंत्र के विषय में जितना वर्णन मिलता हैं उतना और किसी विषय पर नहीं मिलता!

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों का वर्णन रुद्रयामल तंत्र में वर्णित हैं

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्म
मन्वस्न्नागदलसंयुतषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च
श्रीचक्रमे त दुदितं परदेवतायाः॥

अर्थात: श्रीयंत्र के नौ चक्र क्रम में १. बिन्दु, २. त्रिकोण, ३. आठ त्रिकोणों का समूह, ४. दस त्रिकोणों का समूह, ५. दस त्रिकोणों का समूह, ६. चौदह त्रिकोणों का समूह, ७. आठ दलों वाला कमल, ८. सोलह दलों वाला कमल, ९. भूपुर ।

इन चक्रों को भिन्न-भिन्न रंगों से दर्शाने का विधान हैं, कमल के भितर दर्शाये गय क्रमशः २,३,४,५,६ के कुल मिलाकर जो ४३ त्रिकोण (इन ४३ त्रिकोण की सहायता से अन्य त्रिकोण कुल मिलाकर १०८ बनते हैं।) दर्शाये गये हैं उसके विषय में आनन्द सौंदर्य लहरी का उल्लेख उपर दर्शाया गया हैं।

इन चक्रों में यदि त्रिकोण उर्ध्वमुखी हो तो वह चक्र शिवप्रधान कहलाता हैं एवं यदि बीच का त्रिकोण अधोमुखी या स्वाभिमुखि हो तो वह शक्ति प्रधान यंत्र कहा जाता हैं। श्रीयंत्र से संबंधित विषय अत्यंत व्यापक हैं यही कारण हैं की श्रीयंत्र का पूजन दक्षिण-मार्ग एवं बाम-मार्ग दोनों विधि या प्रयोग से किया जाता हैं, जिसका विस्तृत वर्णन त्रिपुरतापिनी उपनिषद एवं त्रिपुरा उपनिषद में समान रुप से वर्णित हैं।

श्रीयंत्र में नौ चक्रों के नाम एवं उसके भिन्न-भिन्न रंगों क्रम क्रमशः इस प्रकार है..

(१) सर्वानन्दमय (केन्द्रस्थ रक्त बिन्दु)

(२) सर्व सिद्धिप्रद (पीले रंग का त्रिकोण)

(३) सर्वरक्षाकार (हरें रंग के आठ त्रिकोणों का समूह)

(४) सर्व रोग हर (काले रंग के दस त्रिकोणों का समूह)

(५) सर्वार्थ साधक (लाल रंग के दस त्रिकोणों का समूह)

(६) सर्व सौभाग्यदायक(नीले रंग के चौदह त्रिकोणों का समूह)

(७) सर्व संक्षोभक्ष(गुलाबी रंग के आठ दलों वाला कमल)

(८) सर्वाशापरिपूरक(पीले रंग के सोलह दलों वाला कमल)

(९) त्रैलोक्य मोहन(हरे रंग का बाहरी स्थल अर्थात भूपुर)

श्री यन्त्र के नौ चक्रों का विस्तृत वर्णन

सर्वानन्दमय चक्र:

सर्वानन्दमय चक्र की अधिष्ठात्री देवी ललिता अथवा त्रिपुरसुन्दरी हैं, जो अपने आवरण में देवताओं के भेद से कहीं पर षोडश देवीयों में मुख्य मानी गयी हैं और कहीं पर अष्ट मातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गयी हैं, कहीं पर अष्ट वशिनी देवताओं की अधिनायिका मानी गयी हैं। यह भेद प्रस्तार अलग-अलग भेद से हुए हैं और यथा क्रम से इन तीनों प्रस्तारों के नाम मेरु, कैलास तथा भूः प्रस्तार हैं। यही श्रीयंत्र की उपासना के प्रमुख प्रकार माने जाते हैं।

सर्व सिद्धिप्रद चक्र:

सर्व सिद्धिप्रद चक्र जो एक त्रिकोण हैं, इस त्रिकोण के तीनों कोण को कामरुप, पूर्णागिरि तथा जालन्धर पीठ कहां गया हैं। इनके मध्य में औड्याणपीठ हैं, प्रथम तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवी कामेश्वरी, ब्रजेश्वरी तथा भगमालिनी हैं जो प्रकृति, महत् तथा अभिमान हैं।

सर्वरक्षाकार चक्र:

सर्वरक्षाकार चक्र जो आठ त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ वासिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, विमला, आरुणा, जयिनी, सर्वैश्वरी थथा कौलिनी हैं जो क्रमशः शीतः, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्त्व, रज तथा तम की स्वामिनी हैं। इस चक्र का साधक गुणों पर अधिकार करने और द्वन्द्व करने में समर्थ होता हैं।

सर्व रोग हर चक्र:

सर्व रोग हर चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वज्ञा, सर्वशक्तिप्रदा, सर्वेश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिनाशिनी, सर्वाधारा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षा तथा सर्वेप्सितफलप्रदा हैं, जो क्रमशः रेचक, पाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक, जम्भक तथा मोहक वह्निकलाओं की स्वामिनी हैं।

सर्वार्थ साधक चक्र:

सर्वार्थ साधक चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ दस प्राणों की स्वामिनी हैं, जो क्रमशः सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःख विमोचनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्व विध्ननिवारिणी, सर्वांगसुन्दरी तथा सर्व सौभाग्यदायिनी हैं।

सर्व सौभाग्यदायक चक्र:

सर्व सौभाग्यदायक चक्र जो चौदह त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्लादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्वअम्भिनी, सर्ववशंकरी, सर्वराजनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधनी, सर्वसम्पत्तिपूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी हैं। यह देवीयां मुख्य नाड़ियों की स्वामीनी हैं, जो क्रमशः अलम्बुसा, कुहु, विश्वोदरी, वारणा, हस्तिजिह्वा, यशोवती, पयस्विनी गान्धारी, पूषा, संखिनी, सरस्वती, इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्णा हैं।

सर्व संक्षोभक्ष चक्र:

सर्व संक्षोभक्ष चक्र जो आठ दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ अनंकुसुमा, अनंगमेखला, अनंगमदना, अनंगमदनातुरा, अनंगरेखा, अनंगवेगिनी, अनंगमदनांकुशा तथा अनंगमालिनी हैं, जो क्रमशः वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द हीन, उपादान तथा उपेक्षा बुद्धि की स्वामिनी हैं।

सर्वाशापरिपूरक चक्र:

सर्वाशापरिपूरक चक्र जो सोलह दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ कामाकर्षिणी, बुद्धध्याकर्षिणी, शब्दाकर्षिणी, स्पर्शाकर्षिणी, रुपाकर्षिणी, रसाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, चित्ताकर्षिणी, धैर्याकर्षिणी,

स्मृत्याकर्षिणी, नामाकर्षिणी, बीजाकर्षिणी, आत्माकर्षिणी, अमृताकर्षिणी तथा शरीराकर्षिणी हैं, जो क्रमशः मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध, चित्त, धैर्य स्मृति, नाम, वार्धक्य, सूक्ष्म शरीर, जीवन तथा स्थूल शरीर की स्वामिनी हैं।

त्रैलोक्य मोहन चक्र:

त्रैलोक्य मोहन चक्र जो बाहरी स्थल हैं, जिसके चार विभाग हैं (क) षोडशदल कमल के बाहरी चारों वृत्तों के परे गड़ाग सदृश स्थल। (ख) इस स्थल से लगी हुई पतली बाहरी रेखा (ग) दूसरी बाहरी रेखा और (घ) सबसे बाहर बाली रखा। इन चारों विभागों में क्रमशः दस मुद्राशक्तियाँ, दस दिकपाल, आठ मातृकाएँ तथा दश सिद्धियाँ स्तित हैं।

दस मुद्राशक्तियों के नाम क्रमशः सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वावेशकरिणी, सर्वोन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीजमुद्रा, महायोनि तथा त्रिखण्डिका हैं, जिसका आधार दस आधारों से हैं, इन आधारों का विस्तृत वर्णन यहां करना संभाव नहीं हैं। लेकिन इतना अवश्य है की इन आधारों के रुप में ही श्रीयंत्र तथा षट्चक्रों का तादात्मय सिद्ध होता हैं।

दस दिकपाल के नाम क्रमश: इंद्र, अग्नि, यम, नऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईश्व, अनंत और ब्रह्मा।

आठ मातृकाओं के नाम क्रमशः ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी हैं। इन मातृकाओं का पूजन का लक्ष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, पाप तथा पुण्य पर विजय प्राप्त करने हेतु किया जाता हैं।

श्रीयंत्र का निर्माण और पूजन

जानकारों का कथन हैं की श्रीयंत्र के निर्माण हेतु सर्वोत्तम दिन पौष मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो अति उत्तम संयोग माना जाता हैं। लेकिन एसे योग अत्यंत दुर्लभ होते हैं, इस लिए यदि एसा योग नहीं बन रहा हो तो किसी भी मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो भी शुभकारी माना जाता हैं अथवा किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन रविवार हो, या धनतेरस, दीपावली, नवरात्री, रविपुष्य योग, गुरुपुष्य योग इत्यादि होने पर भी यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं। यदि उक्त सभी मुहूर्त का संयोग न हो तो किसी भी शुभ मुहूर्त में यंत्र का निर्माण शुद्धधातु में करवालें।

उत्तम तो यहीं होगा कि श्रीयंत्र को किसी जानकार व्यक्ति के द्वारा ताम्रपत्र, रजत या सुवर्ण पर उत्कीर्ण करवालें।

पूजन

- ❖ यंत्र प्राप्त हो जाये तो ब्रह्ममुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त हो कर, शांत चित्त से पूर्वाभिमुख हो कर बैठा जाये।
- ❖ श्रीयंत्र का धूप-दीप, गंध पुष्प आदि अर्पित कर उसका षोडषोपचार पूजन करे या विद्वान कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा करवाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें। अपने पूजन स्थान पर लाल वस्त्र बिछाकर, उस पर केसर या हल्दी रंगे हुवे अक्षत से अष्टदल बनाकर उस के उपर यंत्र स्थापित करना चाहिए। यंत्र का पूजन अथवा प्राण-प्रतिष्ठा पूर्ण हो जाने पर अगले दिन श्री यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर या तिजोरी, कैशबोक्स इत्यादि धन रखने वाले स्थानों पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापित करें।
- ❖ प्रतिदिन श्रीयंत्र का पंचोपचार पूजन और श्रीसूक्त का नियमित पाठ करने से यह अत्याधिक फलदायी सिद्ध होता हैं।
- ❖ यदि प्रतिदिन पंचोपचार पूजन या श्रीसूक्त का पाठ संभव न हो तो पूर्ण श्रद्धा भाव से केवल धूप-दिप से पूजन एवं दर्शन कर लक्ष्मी मंत्र का जाप करना भी

लाभप्रद होता हैं।

- लक्ष्मी मंत्र के उच्चारण के लिए स्फटिक या कमलगट्टे की माला श्रेष्ठ मानी जाती हैं। (कमल गट्टा देवी लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय हैं, देवी लक्ष्मी का निवास कमल के पुष्पों पर होता हैं।)

श्रीयंत्र ध्यान मंत्र

दिव्या परां सुघवलारुण चक्रायातां
मूलादिबिन्दु परिपूर्ण कलात्मकायाम्।
स्थित्यात्मिका शरघनुः सुणिपासहस्ता।
श्रीचक्रतां परिणिता सततंनमामि ।

श्रीयंत्र प्रार्थना मंत्र

ध्यान के पश्चयात श्रीयंत्र की प्राथना करें।
धनं धान्यं धरां हर्म्यं कीर्तिर्मायुर्यशः श्रियम्।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मी प्रयच्छ में॥

विभिन्न धर्मग्रंथों एवं शास्त्रों के अनुशार मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित, पूर्ण चैतन्ययुक्त श्रीयंत्र के सामने लक्ष्मी बीज मंत्र की माला जप करना अत्याधिक लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

लक्ष्मी बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मै नमः।

श्रीयंत्र के सम्मुख भोग लगाकर उसे स्वयं और परिजनों को भी प्रसाद के रुपमें बांट दें।

श्रीयंत्र से जुड़ी रोचक बाते।

श्रीयंत्र का विलक्ष्ण प्रभाव हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही ज्ञात कर लिया था!

आदिगुरु शंकराचार्याजी ने श्रीयंत्र के गूढ़ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था। शंकराचार्याजी श्रीयंत्र अद्‌भुत प्रभावों से परिचित थे इस लिए उनकी श्रीयंत्र पर गहरी आस्था एवं विश्वास के कारण ही श्री यंत्र को उन्हो ने अपने सभी मठों में प्रतिष्ठा एवं दैनिक पूजन करने का सुझाव दिया था, यही कारण हैं की आज उनके प्रत्येक मठ में श्रीयंत्र का विधिवत पूजन-अर्चन किया जाता हैं। विद्वानों का मानना हैं की दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध तिरुपति बालाजी के मंदिर की नींव में श्रीयंत्र स्थापित हैं। इतनाही नहीं वहां मुख्य विग्रह के पीठ में श्रीयंत्र उत्कीर्ण हैं। जिसका नियमित विधि-विधान से पूजन किया जाता हैं!

आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा (देलवाड़ा) के मंदिर के खम्भों पर श्रीयंत्र अंकित हैं।

पौराणिक लोक मान्यताओं के अनुशार सोमनाथ के विश्व प्रसिद्ध महादेव मंदिर के भूगर्भ में सुवर्ण शिला पर श्रीयंत्र का उत्कीर्ण किया गया था। जिसका पूजन गुप्त रुप से विद्वान ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था। इसी कारण से पुरातन काल से वहां अतुल सम्पत्ति की नित्य वर्षा होती थी। यही कारण हैं की वहां अनमोल अरबों-खरबो के हीरे-जवाहरात बहुमूल्य रत्न इत्यादि उसके स्थम्भों पर ही जड़ित थे। जिसकी ख्याति सुन कर मोहम्मद गजनबी ने इसे लूट लिया और सोने की लालच में श्रीयंत्र को टूकड़ों में काटकर अपने साथ ले गया तब से मंदिर श्रीयंत्र से विहिन माना जाता हैं।

गुजरात के सूरत शहर में मेरुलक्ष्मी मंदिर या श्रीयंत्र मंदिर स्थित हैं इस मंदिर का निर्माण पूर्ण रुप से श्रीयंत्र के आकार में भव्य एवं विशाल रुप में किया गया हैं। संपूर्ण मंदिर को श्रीयंत्र की आकृति के अनुरुप निर्मित किया गया हैं, मंदिर के मध्य में श्रीयंत्र स्थापित हैं।

एक प्रचलित कथा के अनुशार किसी राज्य में भानुप्रताम नाम का अति धर्मभीरु आध्यात्मिक विचारों वाले राजा का राज था। वह बद्रीनाथ का उपासक था। उसके पार श्रीयंत्र था, कहां जाता हैं की श्रीयंत्र की सिद्धिअ राजा के पास थी। राजा इसी श्रीयंत्र के माध्यम से देवभाष्य जानता था। श्रीयंत्र के कारण ही उसे आकाशवाणी हुई कि वह अपना राजपाड त्यागकर अपनी कन्या का ब्याह मालवा के राजा कनकपाल से करके हिमालय के प्रसिद्ध बद्रीधाम में आकर देव-दर्शन का लाभ प्राप्त करें। राजा कनकपाल ने अपने गुरु के निर्देश पर श्रीयंत्र को नौटी नामक स्थान के चौराहे में

विधिवत पूजन कर भूमिगत स्थापित किया, जो स्थान कालांतर में नन्दा देवी श्रीपीठ के रुप में प्रसिद्ध हुवा।

भारत के साथ-साथ श्रीयंत्र के प्रभावों की जानकारी अन्य देशों में निवास करने वाले भारतीय एवं वहां के स्थानिय लोगो को भी अवश्य रहती होगी! क्योकि भारतवासी जहां भी गये वहां श्रीयंत्र को अपने साथ लेकर गये और निरंतर उसके प्रभावों का विस्तार करते रहें।

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के मुख्य द्वार पर श्रीयंत्र निर्मित हैं।

- ❖ जिस श्रीयंत्र में सभी चक्र एवं बीज मंत्र अंकित हो वह संपूर्ण श्रीयंत्र कहां जाता हैं और जो यंत्र केवल चक्रों से बना हो बीज, शक्ति मंत्रों इत्यादि से रहित हो वह श्रीचक्र यंत्र कहां जाता हैं।
- ❖ आज कल श्रीयंत्र की अपेक्षा श्रीचक्र यंत्र ही अधिक देखने में आते हैं। लेकिन कुछ जानकारों का मानना हैं की बीजाक्षर की शक्ति ही मंत्र यंत्र की आत्मा एवं प्राण माने जाते हैं।
- ❖ यामल ग्रंथ में वर्णित हैं की श्री यंत्र के दर्शन मात्र से ही विशेष लाभ की प्राप्ति हो जाती हैं।
- ❖ यथा-सार्ध त्रिकोटितीर्थेषु स्नात्वा यत्फलमश्नुते लभते तत्फलम् भक्ता, कृत्वा श्री चक्रदर्शनम्।
- ❖ विद्वानो ने अपने अनुभवों में पाया हैं कि श्री यंत्र अत्यंत प्रभावशाली यंत्र हैं, कि दैनिक श्रद्धापूर्वन श्रीयंत्र के दर्शनमात्र से शीघ्र ही मनुष्य की मनोकामनाए पूर्ण होने लगती हैं।

त्रिपुरतापिनी उपनिषद में उल्लेख हैं:

श्री चक्रं यो धेत्ति स सर्द वेति। स सकलांल्लोकानाकर्षयति। सर्व स्तम्भयति नीलीयुक्तं चक्रं शत्रुन्मरियति। गतिं स्तम्भयति। लाक्षायुक्तं कृत्वा सकललोकं वशीकरोति। नवलक्षजपं कृत्वा रुद्रत्वं प्राप्नोति। मृनिकया वेष्टित कृत्वा विजयी भवति। वर्तुले हुत्वा श्रियमतुलां प्राप्नोति। चतुरस्त्रे हुत्वा वृष्टिर्भवति। त्रिकोणे हुत्वा शत्रून्मारयति। गति स्तम्भयतिः पुश्ज्पाणि हुत्वा विजयी भवति। महारसर्हुर्वा परमानन्दनिर्भरो भवति।

अर्थात: जो श्री यंत्र के रहस्य को जानता हैं वह सकल ब्रहमाण्ड के भूत, भविष्य, वर्तमान को जानता हैं। वह सकल ब्रहमाण्ड को आकर्षित करता हैं, सर्व लोकों को स्तम्भित करता हैं, नीले थोथे से इस चक्र का प्रयोग करने पर शत्रुओं को मारता हैं, गतिमान पदार्थो को रोकने में समर्थ बनता हैं। लाक्षारस के साथ इसका प्रयोग करने से मनुष्य सकल लोकों के प्राणियों का वशीकरण करने में सफल होता हैं। श्रीयंत्र के बीज मंत्र का नवलाख जप करने से मनुष्य रुद्रत्व (शिवत्व अर्थात शिव के समान शाप देने, संहार करने का सामर्थ्य) को प्राप्त करता हैं। मिट्टी से वेष्टित (अर्थात भुजा में धारण करना) करने पर विजयश्री को प्राप्त करता हैं। भग(योनि) की आकृति वाले कुंडाकार यज्ञस्थल पर आहुति देने पर मनुष्य सब प्रकार की स्त्रियों को वशीभूत कर लेता हैं। वर्तला आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य अतुल्य राजलक्ष्मी को प्राप्त करता हैं। चतुष्कोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य वर्षा को उत्पन्न करता हैं। त्रिकोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य शत्रुओं को मारता हैं। गति को स्तम्भित करता हैं। पुष्पों की आहुति देने पर विमल यश एवं विजय को प्राप्त करता हैं। महारस (अर्थात बिल्व फल) की हवि देकर परमानंदत्व को प्राप्त हो जाता हैं।

श्रीविद्या का महत्व:

श्रीविद्या सात्त्विक उपासनाओं में सर्वोपरि एवं सर्व श्रेष्ठ साधना हैं। जिस प्रकार विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना से धन, धान्य, पशु संपदा आदि लौकिक

सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। लेकिन श्रीविद्या की आराधना से धन, धान्य इत्यादि भौतिक सुख साधन तो प्राप्त होते ही हैं उसके साथ-साथ आत्म ज्ञान व परमतत्त्व की प्राप्ति भी होती हैं।

इस विषय में शास्त्रों में उल्लेख हैं।

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो,
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः
श्रीसुन्दरीसेवतत्पराणां,
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।

अर्थात: जहाँ भोग है वहाँ मोक्ष नहीं, जहाँ पर मोक्ष हैं वहाँ भोग नहीं हो सकता। लेकिन श्री महालक्ष्मी की सेवा से भोग व मोक्ष दोनों ही सहज में प्राप्त हो जाते हैं।

यदि कारण हैं की हजारों वर्षो से श्री महालक्ष्मी की उपासना का प्रबल माध्यम श्री यन्त्र ही रहा हैं। त्रिपुरोपनिषद में कादि-हादि विद्याओं के नाम से श्रीविद्या का स्पष्ट उल्लेख मिलता हैं। श्रीशंकराचार्य कृत सौन्दर्य लहरी एवं प्रपंचसार आदि ग्रंथ श्री यंत्र के शुद्ध एवं सात्त्विकता के सर्वोत्तम प्रमाण हैं।

कुछ जानकार विद्वानों का कथन हैं की श्रीविद्या गुरुगम्य हैं। इस लिए गुरुकृपा के बिना प्राण-प्रतिष्ठित या अभिमंत्रित श्री यंत्र उत्तम फल नहीं देते। श्रीआदि गुरु शंकराचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य से प्राप्त हुई थी। योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा श्री गौड़पादाचार्य के गुरु भगवान दत्तात्रेय ने स्वयं दी थी। इस प्रकार श्रीविद्या के अत्यंत प्राचीन गुर-शिष्य परंपरायें सर्वत्र प्रसिद्ध हैं।

सुन्दरीतापनीय में उल्लेख हैं की जिस प्रकार घट, कलश और कुंभ तीनों शब्द का एक ही अर्थ हैं उसी प्रकार यंत्र, देवता और गुरु यह तीनों शब्द का एक ही हैं।

कुछ विद्वानो का मत हैं की भोजपत्र पर निर्मित श्रीयंत्र विशेष प्रभावी होती हैं। क्योकि शास्त्रों में वर्णित हैं की *"यः भूर्जदपैर्यजाति स सर्वान्लभते"*

श्रीयंत्र के तीन प्रमुख प्रकार हैं।

1. मेरुपृष्ठ, 2. कूर्मपृष्ठ, 3. भूपुष्ठ।

कुछ विद्वजनों का कथन हैं की श्रीयंत्र को प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकारी केवल वही मनुष्य को होता हैं जिसने श्रीविद्या की योग्य गुरु से दिक्षा लि हो। योग्य गुरु से दिक्षा प्राप्त किय बिना बडे से बडे विद्वान ब्राह्मण को भी चाहे वह चारों वेद का ज्ञाता हो या पूजा-पाठ में प्रखंड विद्वान हो उसे भी श्री यंत्र को अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकार नहीं हैं। यही कारण हैं की अज्ञानता वश किये गये इस प्रकारके पूजनों के कारण आज बडे से बडे विद्वान ब्राह्मण के पास ज्ञान तो खुब होता हैं लेकिन मां लक्ष्मी की विशेष कृपा उसके पर नहीं होती!

- विद्वानों का कथन हैं की धार्मिक मान्यता के अनुशार भोजपत्र की अपेक्षा तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र का फल सौ गुना होता हैं।
- तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र का फल लाख गुना होता हैं।
- चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा सुवर्ण पर निर्मित श्रीयंत्र का फल करोड़ो गुना होता हैं।
- रत्नसागर ग्रंथ में रत्नों पर निर्मित भिन्न-भिन्न श्रीयंत्र के फलों का वर्णन मिलता हैं।
- जिसमें स्फटिक पर बने श्रीयंत्र को सर्वश्रेष्ठ बताया गया हैं।

विद्वानों का मत हैं:

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 6 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 20 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

कुछ विद्वानो का मत हैं

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 1 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 2 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है। और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

विशेष नोट: हमारे अनुभवों के अनुशार यन्त्र यदि शुद्ध धातु में निर्मित हो, तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित हो तो वह आजीवन प्रभावी रहता है, चाहे वह सोने, चांदी या तांबे में ही निर्मित क्यों न हो। एक शुद्ध धातु में निर्मित एवं पूर्ण विधि विधान से मंत्रसिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित किया गया यंत्र जब तक व्यक्ति के पूजन स्थान में स्थापित रहता हैं तब तक वह प्रभावशाली रहते देखा गया हैं। इसमें जरा भी संदेह नहीं हैं। केवल कुछ विशेष यंत्र ऐसे होते हैं जो साधना विशेष या कार्य उद्देश्य की समाप्ति के पश्चयात जल में विसर्जित करने होते हैं। यंत्र यदि किसी कारण से खंडित हो जाये, उस पर अंकित रेखा, अंकन, बीज मंत्र आदि धूंधले हो जाये या सरलता से दिखाई नहीं देते हो तब, अथवा किसी कारण से यंत्र अशुद्ध हो जाये हाथ से गिर जाये तब उसे जल में विसर्जित करके दूसरा स्थापित करलेना चाहिए। यंत्र के अशुद्ध, खंडित होने या हाथों से गिरजाने पर उसके शुभ प्रभाव में कमी आने लगती हैं।

श्रीविद्या के अद्भुत चमत्कारों में से एक का वर्णन "शंकर दिग्विजय" में मिलता हैं जो इस प्रकार हैं।

जब आचार्य शंकर अपने गुरु के यहां रहते थे, तब गुरुगृह के नियम अनुशार आचार्य शंकर एक दिन किसी ब्राह्मण के द्वार पर भिक्षा के लिए गए। वह ब्राह्मण बहुत निर्धन था, भिक्षा में देने के लिए उसके घर में मुट्ठी भर चावल भी नहीं थे। निर्धन ब्राह्मण की पत्नी ने आचार्य शंकर को एक आवंला देकर रोते हुए अपनी अवस्था बतलाई। ब्राह्मण पत्नी की दुःखद करुण निर्धनता की व्यथा सुनकर आचार्य शंकर का हृदय द्रवित हो गया। आचार्य शंकर ने वहीं खडे होकर, करुण विगलित चित्त से श्रीविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और आचार्य शंकर की वाणी से अनायास करुणापूर्वक कोमल कान्त वाक्यों से आकृष्ट हो कर माँ महालक्ष्मी आचार्य शंकर के सामने अपने त्रिभुवन मनोहर रुप में प्रकट हो गई और कोमल शब्दों में कहा, पुत्र "मैने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया हैं, परन्तु इस निर्धन परिवार ने पूर्व जन्मों में ऐसा कोई भी सुकृत, पुण्य कार्य नहीं किया हैं जिससे मैं इन्हें धन दे सकूँ।"

माँ महालक्ष्मीजी के इन वचनों पर आचार्य शंकर ने बडे ही विनीत शब्दों में माँ महालक्ष्मीजी से निवेदन किया की "पूर्व जन्म में इस ब्राह्मण ने ऐसा कोई कार्य सुकृत कार्य नहीं किया हैं जिसके फलस्वरुप उसे धन-सम्पत्ति दी जा सके इससे क्या हुआ। मेरे जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने तो महान् पुण्य राशि अर्जित कर लिया हैं, इस कारण यह परिवार अतुल धन सम्पत्ति का अधिकारी हो गया हैं, अतः यदि आप प्रसन्न हुई हों तो इस परिवार को दारिद्रय से मुकत कर दीजिये"

आचार्य शंकर के इस निवेदन का माँ महालक्ष्मी खण्डन न कर सकीं और प्रसन्न होकर देवी ने कहा "यही होगा आचार्य, मैं उन्हें प्रचुर सोने के आंवले दूंगी।" देवी के मुख से इतना सुनने पर आचार्य शंकर नें ब्राह्मण परिवार को शीघ्र धनवान होने का आशीर्वाद देकर गुरुगृह लौट गये। दूसरे दिन प्रातःकाल ब्राह्मण परिवार ने देखा, उनके घर में सर्वत्र सोने के आंवले बिखरे पडे हैं। इस प्रकार आचार्य शंकर नें श्रीविद्या की उपासना से ब्राह्मण परिवार को धनवान बना दिया।

अधिकतर लोगों ने श्रीयंत्र को चित्रित ही देखा होगा, जिससे यंत्र के निर्माण की वास्तविक विधि समझना कठिन हैं। चित्रित यंत्रों में हमें केवल उसकी लम्बाई और चौड़ाई ही नज़र आती हैं, उचाई नहीं होती। लेकिन वास्तविक रुप से यंत्र की उंचाई भी होती हैं जो मुख्यरुप से घातु और पत्थरों से बने यंत्रों में दिखाई दिती हैं। इस तरह के यंत्र को पत्थर पर काटकर, स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों पर देखने को मिलते हैं। इसके अलावा शालिग्रामशिला, ताम्रपत्र, रजत पत्र ओर सुवर्ण में भी यंत्र बनाये जाते हैं। श्रीयंत्र के निर्माण में भू अथवा मेरु दोनों पद्धतियों का उपयोग होता हैं।

श्रीयंत्र की विशेषता एवं उपयोगिता

पौराणिक काल से ही हिन्दू संस्कृति में श्रीविद्या की उपासना अत्याधिक प्रचलित रही हैं। यही कारण हैं

की हिन्दू संस्कृति में तब से लेकर आजतक बडे-बडे विद्वान आचार्य श्रीविद्या के उपासक रहे हैं।

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों के भिन्न-भिन्न प्रयोग से लाभ:

(१) सर्वानन्दमय अर्थात् सब प्रकार का आनन्द देने वाला हैं।
(२) सर्व सिद्धिप्रद अर्थात् सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
(३) सर्वरक्षाकार अर्थात् सभी से रक्षा करने वाला हैं।
(४) सर्व रोगहर अर्थात् सभी रोगों का हरण करने वाला हैं।
(५) सर्वार्थ साधक अर्थात् सभी कार्यों की सिद्धि करने वाला हैं।
(६) सर्व सौभाग्यदायक अर्थात् सभी सौभाग्य को प्रदान करने वाला हैं।
(७) सर्व संक्षोभक्ष अर्थात् संक्षोभण करने वाला हैं।
(८) सर्वाशापरिपूरक अर्थात् सभी आशाओं को पूरण करने वाला हैं।
(९) त्रैलोक्य मोहन अर्थात् तीनोलोक का मोहन करने वाला हैं।

3

यंत्र निर्माण विधान

❖ यदि श्री यंत्र का निर्माण भोजपत्र पर करना हो, तो तुलसी, अनार या मोरपंख की कलम से रक्त चंदन से यंत्र का निर्माण करना चाहिए। पीले रंग हेतु शुद्ध केसर का प्रयोग करना चाहिए।

❖ अष्टगंध, सिन्दूर या कुंकुम से भी यंत्र लिखे जा सकते हैं। इसके अलावा यंत्र को सुवर्ण, रजत, तांम्र, स्फटिक आदि मूल्यवान धातु या रत्नों पर उत्कीर्ण कराकर यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं।

❖ यन्त्र के निर्माण हेतु सर्व प्रथन त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु फिर क्रमशः उपर दर्शाये गये आठ चक्रों को बनाना चाहिए।

❖ श्रीक्रम में शिवजी का कथन हैं कि जो मनुष्य सम रेखा न लिख कर, समान मुख न बनाकर श्रीयंत्र का निर्माण करता हैं, उसका सर्वस्व मैं हर लेता हूँ।

❖ विद्वानों का मत हैं की जिस स्थल पर जिस देवता का स्थान निर्दिष्ट किया गया हो, उस स्थान पर देवता का पूजन नहीं करने पर साधक के मांस और रक्त द्वारा उस देवता की पारणा होती हैं।

❖ श्री यंत्र के निर्माण के समय किसी पशु या भावावलम्बी जीव की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए, इस लिए सरर्क हो कर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति पशु के आगे श्री यंत्र को लिखता हैं, तो वह मन्द-बुद्धि, साधक अंगक्षय से होने वाले पाप का भागी होता हैं।

❖ भूत भैरव में उल्लेख हैं कि यदि श्री यंत्र को बनाते समय पद्म में केशर न बनाये। यदि कोई व्यकि निर्माण के समय पद्म के केशर के कल्पना करता हैं, तो भैरव गण योगिनियों की सहायता से उसका नाश कर देते हैं।

❖ श्री यंत्र को रात्रिकाल में नहीं लिखना चाहिए। रात्रि-काल में यंत्र का निर्माण करने से देवी तत्काल साधक को अभिशाप देती हैं।

❖ अपराजिता, कर, वीर और जवा पुष्प में देवी निवास करती हैं। इस लिए इन पुष्प से देवी का पूजन किया जा सकता हैं।

❖ स्वच्छन्द भैरव में उल्लेख हैं कि स्थण्डिल के उपर एक हाथ के बराबर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। रत्नादि के यंत्र बनाने हो तो इच्छानुसार एक, दो, तीन अथवा चार तोले के रत्न लेकर यन्त्र बनवाया जा सकता हैं। इससे अधिक परिमाण के रत्न द्वारा यंत्र का निर्माण करने से साधक प्रायश्चित का भागी होता हैं।

❖ त्रिधातु का यंत्र बनाना हो तो, सुवर्ण, तांम्र और रजन इन त्रिनों धातुओं का प्रयोग किया जाता हैं। जिसमें दस भाग सोना (26.315 %), बारह भाग तांबा (31.580%), और सोलह भाग रजत (42.105%),को एकत्र करके यंत्र का निर्माण करना चाहिए। त्रिधातु से बने यंत्र का पूजन करने से साधक सौभाग्यशाली होता हैं और शीघ्र ही अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

- स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों से बने श्री यंत्र का पूजन करने से धन-सम्पत्ति, स्त्री-संतान, मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती हैं।
- ताम्र के यंत्र का पूजन करने से क्रांति प्राप्त होती हैं।
- सुवर्ण के यंत्र का पूजन करने से शत्रु नाश होता हैं।
- रजत के यंत्र का पूजन करने से साधक का कल्याण होता हैं।
- स्फटिक के यंत्र का पूजन करने से साधक को सभी अभिष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं।

यंत्र के विनष्ट होने पर उसका प्रायश्चित

- यदि यंत्र दग्ध स्फुटित या चोर के द्वारा अपहृत हो जाये, तो साध को एक दिन उपवास करके देवता के मंत्र का एक लाख जप एवं जप संख्या का दशांश हवन तथा हवन का दशांश तर्पण करना चाहिए। फिर भक्तिभाव से अपने गुरुदेव की आज्ञा से ब्राह्मण भोजन कराये। कुछ जानकार एक लाख जप को एक अयुत अर्थात दश सहस्त्र कहते हैं।
- यदि यंत्र के लुप्त-चिह्न, स्फुटित या खंडित होने पर उस यंत्र को गंगा आदि पवित्र नदियों के जल में, तीर्थ या सागर में विसर्जित करदेना चाहिए। शास्त्रों में उल्लेख हैं की यंत्र को विसर्जित न करके उसे पास रखने से साधक की मृत्यु या विविध दुःख होते हैं।

श्रीचक्र पादोदक का माहात्म्य:

ब्रह्माण्ड में स्थित जितने तीर्थ स्थल हैं उन सबके स्नान से सहस्त्र कोटि गुना अधिक फल श्रीचक्र पादोदक के सेवन से मिलता हैं। (गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, गोमती, पुष्कर, प्रयाग, हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, सिन्धु, रेवा, सरस्वती आदि तीर्थ स्थल कहे जाते हैं।)

श्रीचक्र के दर्शन का फल:

एक प्राण-प्रतिष्ठित चैतन्ययुक्त किये गये "श्री यंत्र" के विषय में विद्वानों का कथन हैं कि, विधि-विधान से सौ यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। सोलह महादानों के करने से जो पुण्य फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। साढे तीन कोटि(अर्थात साढ़े तीन करोड़) तीर्थों में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता हैं, वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। यदि मनुष्य वास्तव में सुखी और सृमद्व होना चाहता है तो उसे श्रीयंत्र स्थापना अवश्य करनी चाहिये।

अभिमंत्रित श्रीयंत्र

आज बाजार में रत्नों के बने श्री यंत्र सरलता से प्राप्त हो जाते हैं लेकिन यह सब सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित या चैतन्ययुक्त नहीं होते। जब श्री यंत्र को पूर्ण शास्त्रोंक्त विधि-विधान से तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित किया जाता हैं तभी वह पूर्ण रुप से प्रभावशाले एवं सुख-समृद्धि देने वाला होता है। यह आवश्यक नहीं कि श्री यंत्र दुर्लभ द्रव्यों या रत्नों का बना हो। यदि श्रीयंत्र शुद्ध धातु में निर्मित एवं अखंडित हैं और यंत्र शास्त्रोंक्त विधि-विधान से अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित हैं तो वह श्री यंत्र तांबे पर ही क्यो न बना हो वह निश्चित पूर्ण रुप से प्रभावशाली ही रहता हैं। जब तक यंत्र मंत्रों द्वारा सिद्ध नहीं होता तब तक वह श्री प्रदाता अर्थात धन-समृद्धि प्रदान करने वाला नहीं बनता!

विभिन्न द्रव्यों एवं धातुओं से निर्मित श्री यंत्र का फल।

स्फटिक श्रीयंत्र

स्फटिक रत्न पर उत्कीर्ण किया हुआ श्री यंत्र दुर्लभ माना जाता हैं और यह सभी द्रव्यों से अतिशीघ्र फल प्रदान करने वाला रत्न है। स्फटिक श्रीयंत्र मनुष्य की सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। यदि किसी साधक को सौभाग्य से स्फटिक श्री यंत्र प्राप्त हो जाए तो किसी विद्वान से उसको अभिमंत्रित करवाले। स्फटिक श्री यंत्र रंक को भी वह राजा बनाने में समर्थ हैं। स्फटिक श्री यंत्र का पूजन करने से मनुष्य को धन की कभी कमी नहीं रहती।

गुलाबी बिल्लौर (रोज़ क्वार्ट्ज)

रोज़ क्वार्ट्ज से बने श्री यंत्र के पूजन से देवी लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती हैं। रोज़ क्वार्ट्ज श्री यंत्र के पूजन से घर में निरंतर धन-सुख सौभाग्य की वृद्धि होती है। रोज़ क्वार्ट्ज श्री यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर रोज़ क्वार्ट्ज की माला से लक्ष्मी मंत्र का जप करने से यह अत्यंत चमत्कारिक फल देनेवाला सिद्ध होता है। रोज़ क्वार्ट्ज से बने श्री यंत्र के पूजन से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और व्यक्ति को अक्षय धन-संपदा की प्राप्ति होती है। रोज़ क्वार्ट्ज श्री यंत्र के पूजन से आकस्मिक धन प्राप्ति के स्रोत बनते हैं। क्योकि, रोज़ क्वार्ट्ज आपमें से दुर्लभ रत्न होता हैं अतः रोज़ क्वार्ट्ज से बना श्री यंत्र भी अत्यंत दुर्लभ है।

पन्ना श्री यंत्र (मरगज / ग्रीन जेड)

मरगज श्रीयंत्र के पूजन से व्यक्ति को ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होती हैं। जिस प्रकार ज्योतिष मे बुध के शुभ प्राभावों मे वृद्धि हेतु पन्ना रत्न का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार पन्ना श्री यंत्र (मरगज / ग्रीन जेड) श्री यंत्र के पूजन-अर्चन से बुध की शुभता में वृद्धि होती हैं। मरगज श्री यंत्र का पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन कर दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी धनवान हो सकता हैं।मरगज श्री यंत्र को रोजगार प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, धन प्राप्ति एवं कर्ज़ मुक्ति हेतु अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। मरगज श्री यंत्र को भवन में स्थाप्ति करने से विभिन्न वास्तु दोष दूर होते है। मानसिक अशांति को कम करने में सहायता प्राप्त होती हैं, व्यक्ति द्वारा अवशोषित हरी विकिरण मानसिक शांती प्रदान करती हैं, व्यक्ति के शरीर के तंत्र को नियंत्रित करती हैं। मरगज रत्न जिगर, फेफड़े, जीभ, मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र इत्यादि रोग में सहायक होते हैं।

माणिक्य श्री यंत्र (रुबी)

माणिक्य से बना श्री यंत्र साहस, शक्ति, नाम-प्रसिद्धि और उत्तम स्वास्थ्य के लिए विशेष लाभकारी होता है। जिस प्रकार ज्योतिष मे सूर्य के शुभ प्राभावों मे वृद्धि हेतु माणिक्य का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार माणिक्य श्री यंत्र के पूजन-अर्चन से सूर्य की शुभता में वृद्धि होती हैं। माणिक्य श्री यंत्र विशेष कर राजनीतिज्ञ, उच्च अधिकारी, सरकारी विभाग से जुड़े लोगों के लिए विशेष रुप से सुख-समृद्धि, नाम-यश प्रदान करता है। माणिक्य श्री यंत्र को घर-दुकान-ऑफिस में स्थापित कर सकते हैं।

पारद श्रीयंत्र

शास्त्रों में पारद धातु को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है। शुद्ध पारद से निर्मित श्री यंत्र अति दुर्लभ तथा प्रभावशाली होते है। धन प्राप्ति हेतु उत्तम माना जाता हैं।

स्वर्ण श्रीयंत्र

स्वर्ण धातु में निर्मित श्रीयंत्र संपूर्ण सुख एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला हैं। एसे श्री यंत्र को हमेंशा तिजोरी में ऐसे रखना चाहिए कि परिवार के अलावा किसी अन्य व्यक्ति का स्पर्श न हो।

रजत श्रीयंत्र

चांदी में निर्मित श्रीयंत्र मुख्यतः व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में स्थापित करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

ताम्र श्रीयंत्र

तांबे में निर्मित श्रीयंत्र विशेषः घर, दुकान, ओफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थान पर विशेष रुप से किया जाता हैं। तांबे में निर्मित श्रीयंत्र का प्रतिदिन पूजन करने से आर्थिक स्थिती में सुधार होता हैं। कार्यस्थल पर ग्राहक की द्रष्टि में आये ऐसे स्थापित करने से कारोंबार में वृद्धि होती हैं। केवल शास्त्रोंमें वर्णित पदार्थों पर ही यंत्र का निर्माण करना श्रेष्ठ हैं, लकडी, कपड़े या पत्थर मूल्यहीन द्रव्य आदि पर श्री यंत्र का निर्माण नहीं करना चहिए।

माला में 108 मनके ही क्यों होते हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

साधारणतः मनुष्य के भीतर एसे प्रश्न उठते रहते हैं की माला में 108 मनके ही क्यों होते हैं? इसका सरल उदाहरण आपके मार्गदर्शन हेतु यहां प्रस्तुत किए गए हैं।

- हिंदू धर्म में 108की संख्या को बहुत पवित्र और रहस्यमय माना जाता हैं। इस लिए हिंदू धर्म में माला मे 108 मनके (दाने) का अत्याधिक महत्व हैं।
- 108 मनके (दाने) का अध्यात्म की द्रष्टि से विचार किया जाये तो एक जाप माला मे 108 या 54 या 27 मनके (दाने) होते हैं, ज्यादातर मालाए 108 मनके की बनती हैं एवं बाजार मे यही ज्यदा उपलब्ध होती हैं। उसमे सुमेरु अलग से होता हैं।
- 108 मनके (दाने) को हिन्दु धर्मके उपनिषदों की संख्या से जोडा जाये तो प्रमुख उपनिषद की संख्या भी 108 हैं।
- हिन्दु धर्म में ब्रहम को 9 अंक से जोडा गया हैं। इस लिए ब्रहम के 9 अंक एवं आदित्य के 12 अंक का गुणन (9X12 =108) 108 होता हैं।
- ज्योतिष विज्ञान की द्रष्टि से विचार किया जाये तो 9 ग्रह एवं 12 राशियो (9X12 =108) से जोडा जाता हैं। क्योकि एसी ज्योतिषी मान्यता हैं की 9 ग्रह एवं 12 राशियां मनुष्य पर 108 प्रकार के प्रभाव डालते हैं।
- दूसरी द्रष्टि से विचार किया जाये तो 27 नक्षत्रों एवं हर नक्षत्र के 4 पाद या चरण होते हैं (27x 4 =108) से जोडा जाता हैं।
- अंकशास्त्र में भी एक से नौ तक के सारे अंक महत्वपूर्ण होते हैं। लेकिन अंक नौ खास विशेषता रखता हैं, क्योकि नौ का अंक ही ऐसा अंक हैं, जिसे किसी भी अंक से गुणा करने पर उसका मूलांक नौ ही प्राप्त होता हैं।
- इसी प्रकार हिन्दु संस्कृती में भी नौ का विशेष महत्व हैं। माला के 108 मनको का जोड़ भी 9 होता हैं। (1 + 0 + 8 = 9)
- ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की संख्यानौ हैं और उससे जुडी राशियों को प्राप्त वर्णाक्षरों की संख्या भी नौ हैं।
- रत्नो की संख्या भी नौ हैं, देवी दुर्गा के नौ रुपों की उपासना का विधान हैं। नवरात्री भी नौ दिनोतक मनाई जाती हैं। रस की संख्या भी नौ मानी गई हैं इस लिए नौ रस कहां जाता हैं। प्रमुख आसनो की संख्याभी नौ हैं इस लिए उसे नौ आसन कहां जाता हैं।
- हिंदू संस्कृती में प्रमुख एवं विद्वान साधु-संतों के नाम से पूर्व भी श्री श्री 108 या श्री श्री 1008 की संख्या का योग लगाया जाता हैं जिसका भी कुल जोड नौ होता हैं। इस लिए नौ अंक अपने आप में गूढ रहस्य लिए हुए हैं।
- 9 अंक को मंगल ग्रह का प्रतिक या कारक माना जाता हैं। ज्योतिष में मंगल शक्ति एवं साहस का प्रतिक हैं इस लिए 9 अंक शक्ति, साहस और भाग्य का भी द्योतक माना जाता हैं। ऋग्वेद में ऋचाओं की संख्या 10 हजार 800 है। 2 शून्य हटाने पर 108 होती है।
- शांडिल्य विद्यानुसार यज्ञ वेदी में 10 हजार 800 ईंटों की आवश्यकता मानी गई है। 2 शून्य कम पर 108 संख्या शेष रहती है।
- व्यक्ति एक मिनट मे अंदाज से 15 सांसे लेता हैं। एक घंटे मे 60 मिनिट। एवं एक दिन मे 24 घंटे। 15 x 60 x 24 का कुल जोड = 21,600 = 21,600 / 200 = 108

आयुर्वेद के जानकार मानते हैं की मानव शरीर वात, पित्त और कफ तीनो के संयोग से बना हैं।

यदि मानव शरीर में ये तीनों एक संतुलीत रुप में विध्वमान हो, तो मानव शरीर स्वस्थ माना जाता हैं। यदि इन तीनों में से किसी एक का संतुलन बिगड़ जाए तो

शरीर में रोग उत्पन्न होता हैं। हमारे विद्वान ऋषी-मुनियों नी हजारो वर्ष पूर्व यहं ज्ञात कर लिया था की, मान शरीर में उत्पन्न होने वाले प्रायः सभी रोग उसके मन के दोषों से उत्पन्न होते हैं, जिसे आजके आधुनिक युग में सिद्ध हो चुकी हैं की मनुष्य अपने मनोबल पर सदैव स्वस्थ रह सकता हैं, यदि छोटी-मोटी बीमारीयों को अपने मनोबल से दूर करने में समर्थ हैं।

माला फेरने से उंगली और अंगूठेके अग्र भाग पर दबाव पडता हैं। यह दबाव हमारे मन को एकाग्र करने में हमारी सहायता करता हैं और हमारे भितर आध्यात्मिकता का विकास होता हैं। अधिक माला फेरने से क्रोध एवं वासनाएं शांत होने लगती हैं। शरीर में नई उर्जा का संचार होने लगता हैं एवं साधक का चेहरा कांतिमय बनने लगता हैं।

माला फेरने से स्वास्थ्य लाभ:

माला फेरते समय उंगली के माध्यम से विद्युत तरंग उत्पन्न होती है, जो धमनियों से हृदय में पहुंचकर मन मस्तिष्क को स्थिरता प्रदान करती हैं। माला फेरते समय मध्यमा उंगली पर पडऩे वाले दबाव से हृदय को रोग होने की संभावना को कम रहती हैं। माला फेरने से उंगली और अंगूठे के अग्र भाग पर दबाव पड़ता है और यही दबाव मन को एकाग्र करने में हमारी मदद करता है।

इसलिए ऋषी-मुनियों ने उस काल में ही खोज निकाला था की मन से ही प्रायः विभिना शारीरिक दोषों पर नियंत्रण रखा जा सकता हैं, इसलिए माला के 108 गुटकों या दानों का नाम भी मनका रखा गया होगा?

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

हीरा

शुक्र का रत्न हीरा शुक्र ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। हीरे को शुक्र का रत्न माना गया है। हीरा एक बहुमूल्य रत्न हैं।

हिन्दी मे :- हीरा

सस्कृत मे :- हीरक, वज्र, भागर्व-प्रिय, मणिवर, पवि, अभेद्य, कुलिष, विद्युत, अर्क भिदुर आदि नामो से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- अल्मास

अंग्रेजी :- डायमण्ड

हीरा अन्य रत्नो की अपेक्षा सबसे कठोर रत्न हैं। हीरे को अन्य किसी रत्न से खरोंचा नहीं जा सकता। जानकारो के अनुशार हीरा जितना चमकीला और कठोर होता हैं उतना श्रेष्ठ माना जाता हैं।

हीरा मुख्यत: सफेद, पीला , लाल, गुलाबी और काले रंग का होता हैं।

प्राप्ति स्थान:

जब कोयला पृथ्वी के गर्भ में हजारो-लाखों वर्षो दबा रहता हैं उसमें कुछ एक विशेष प्रक्रिया के उपरांत वह कोयला बेशकीमती रत्न हीरे का स्वरुप धारण कर लेता हैं।

हीरे के लाभ

- जानकारो के मत से हीरा का प्राप्ति स्थान मुख्य रूप से भारत, दक्षिण अफ्रीका, अंगोला, नामीबिया, रूस इत्यादि देशो से प्राप्त होते हैं।
- पौराणिक मान्यता के अनुशार हीरा धारण करने से विषैले जीव-जंतुओं का भय नहीं रहता।
- वृद्ध व्यक्ति के हीरा धारण करने से उनके बल एवं साहस में वृद्धि होती हैं।
- कुछ विद्रानो का मत हैं की हीरा धारण करने से भूत-प्रेत आदि पीड़ाएं शांत होती हैं एवं व्यक्ति पर अशुभ टोने-टोटके इत्यादि का प्रभाव नहीं होता हैं।
- हीरा धारण करने से व्यक्ति को सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य, मान-सम्मान, आदि समस्त प्रकार के भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति होती हैं।
- जानकारो की माने तो हीरे में वशीकरण करने की अद्भुत शक्ति समाहितहोती हैं।
- वंश-वृद्धि हेतु हीरा धारण करना अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- हीरा धारण करने से वैवाहिक सुख में वृद्धि होती हैं।
- हीरा धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति में वृद्धि होती हैं।
- हीरा धारण करना शुक्र जनित रोगों में अत्यंत लाभदायक होता हैं।
- हीरा धारण करने से स्त्री-पुरुष दोनों के व्यक्तित्व में निखार आता हैं।

स्वास्थ्य:

हीरा धारण करने से दुर्बलता दूर होती हैं। हीरा धारण करने से नंपुसकता, वीर्य विकार, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, मानसिक कमजोरी इत्यादि रोग में लाभ प्राप्त होता हैं। हीरा धारण करने से वीर्य दोष, शीघ्र पतन और जनन अंगों दुर्बलता इत्यादी रोगों का नाशक हैं।

महर्षि शुक्राचार्य के मतानुशार:

न धारयेत् पुत्र कामानारी वज्रम कदाचनः।

अर्थात: जो स्त्रीयां पुत्र संतान की कामना करती उन्हें हीरा नहीं पहनना चाहिए।

इस विषय में विद्रानो के मत में भिन्नता हैं। कुछ विद्रानो का मत शुक्राचार्य जी के पक्षमें हैं तो कुछ विद्रान ज्योतिषी के मतानुशार यदि नियमानुसार कोई स्त्री त्रिकोण आकार का हीरा धारण करती हैं उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति होती हैं।

अशुभ हीरा धारण करने से विपरित परिणाम प्राप्त होते हैं इस विषय में विद्वानो का मतानुशार:

धारणात् तच्च पापा लक्ष्मी विनाशनम्।

अर्थात: अशुभ हीरा के धारण से लक्ष्मी का विनाश होता है।

"स्वजनविभवजीवितक्षयं जनयति वज्रमनिष्टलक्षणम्।
अशनिविशभयारिनाशनं शुभमुपभोगकरं च भूभृताम्।"

अर्थात: अशुभ व दोषयोक्त हीरा धारण ने से बान्धवों की हानि, वैभव का नाश, जीवन हानि, प्राण नाश आदि भयंकर परिणाम होते हैं।

उत्तम गुणो से युक्त हीरा व्यक्ति को वज्रपात, विषभय, शत्रुभय का नाश करने वाला व मृत्यु भय को दूर करने वाला होता हैं।

शास्त्र कारो नें हीरे के चार गुण माने हैं।

- श्वेत रंग का हीरा सात्विक होता हैं।
- लाल रंग का हीरा तमोगुणी होता हैं।
- पीले रंग का हीरा रजोगुणी होता हैं।
- तथा काले रंग का हीरा शूद्रगुणी होता है।

मान्यता:

- उत्तम हीरे को गर्म पानी, गर्म दूध, या तेल में डाला जाए तो वह उसको शीघ्र ठंडा कर देता हैं।
- शुद्ध हीरे पर किसी भी पदार्थ से खरोंच का चिह्न नहीं बना सकते।
- यदि हीरे को धूप में रख दिया जाये तो उसमे से इन्द्रधनुष जैसी किरणे दिखाई देती हैं।
- हीरा अंधेरे में चमकता हैं।
- हीरा धारण करने से युद्ध में शस्त्रघात से रक्षा होती हैं।
- हीरा धारण करने से ज्वर के ताप को भी दूर कर देता है।

दोष:

- जिस हीरे में चमक न हो तो एसे हीरे को धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जिस हीरे का रंग धुँधला, धुएं के समान गंदा हो तो एसे हीरे को धारण करने से वाहन एवं पशुधन हेतु घातक होता हैं।
- जिस हीरे का रंग लाल आभायुक्त हो उसे धारण करने से आर्थिक समस्याएं परेशान करती हैं।
- जिस हीरे में गड्ढा हो एसे हीरे को धारण करने से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं उत्पन्न होती हैं।
- पीले रंग का हीरा धारण करने से वंश का नाश होता हैं।
- जिस हीरे में कटा हुवा भाग या धार हो, एसे हीरे को धारण करने से चोर भय होता हैं।
- जिस हीरे में अन्य रंग के बिंदु या छींटे हो, उस हीरे को धारण करने से मृत्यु भय होता हैं।
- जिस हीरे में आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे हीरे को धारण करने से मानसिक शांति भंग होती हैं।

जिस हीरे में कौएं के पंजे के समान चिह्न हो, उस हीरे को धारण करने से सभी प्रकार से प्रतिकूल होता हैं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. **28.00** **से** Rs.**100.00**

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

सात मुखी रुद्राक्ष:

- सात मुखी रुद्राक्ष सप्त मातृकाओं का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इसे शास्त्रों में अनंग स्वरुप भी कहा गया हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार के रोग शांत हो जाते हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से दीर्धायु की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सोने की चोरी, गौवध जैसे अनेक पापों को नाश होता हैं।
- मान्यता हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता की अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से रक्षा करता हैं।
- विद्वानो के मतानुशार सात मुखी रुद्राक्ष अकाल मृत्यु के भय को टालता हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र उत्तम भूमि की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विष प्रभाव से रक्षा होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को सन्निपात, मिर्गी रोग, शीत-ज्वर इत्यादि रोगों को शांत करने में लाभदायक होता हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को यश-मानसम्मान की वृद्धि होती हैं।

सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ हूं क्रीं हीं सौं॥

आठ मुखी रुद्राक्ष:

- आठ मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। आठ मुखी रुद्राक्ष को भैरव का स्वरुप भी माना जाता हैं।

- आठ मुखी रुद्राक्ष अष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विभिन्न प्रकार के विघ्नों को दूर करने वाला हैं।
- जिन लोगों का चित्त अधिकतर चंचल रहता हैं उनके आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से एकाग्रता बढाने में लाभप्राप्त होता हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से असत्य भाषण, मानकूटादिक व परस्त्रीजन्य पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करके गणेशजी की पूजा-अर्चना एवं साधना करने से वह शीघ्र फलप्रद होती हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्व देवगण प्रसन्न होते हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से पूर्णाअयुष्य की प्राप्ति होती हैं।

आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं॥

>> क्रमश: अगले अंक में ...

***

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

- स्वप्न में छत देखना भवन निर्माण का संकेत है।
- स्वप्न में छड़ी देखना संतान से लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में छतरी खोल कर चलते देखना किसी मुसीबतों से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छत्र देखना सरकार से सम्मान मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छलनी देखना व्यापार में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में छल्ला पहने देखना शिक्षा में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छलांग लगाते देखना असफलता प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में छम-छम (पायल जैसी) आवाज़ सुनना मेहमान के आगमन का संकेत है।
- स्वप्न में छाज देखना समाज में सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में छाछ पीते देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छापाई खाना देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छात्रो का समूह देखना शिक्षा में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छिपकली देखना दुश्मन से कष्ट प्रप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में छींक आते देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में छुआरा खाते देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छुरा देखना दुश्मन से भय मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में छोटे बच्चे देखना मोनोकामना पूर्ण होने का संकेत है।

- स्वप्न में जमघट देखना अपने कार्य की प्रशंसा होने का संकेत है।
- स्वप्न में जयकार सुनना किसी संकट ग्रस्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में जलते देखना सामाजिक मान सम्मान की प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में ज्योतिषी को देखना संतान को कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में जटाधारी साधु देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में जंजीर को खुली देखना जुठे इल्जाम लगेने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को जंजीर में जकडे देखना किसी समस्याओ से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में जल देखना संकट से ग्रस्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में जड़े देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में ज्वालामुखी देखना स्थान परिवर्तन होने का संकेत है।

- स्वप्न में जमीन पर चलते देखना नया रोजगार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में जमीन खोदते देखना कार्य में कठिन परिश्रम से लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में जंगल देखना कष्ट दूर होने का संकेत है।
- स्वप्न में जलेबी खाते देखना सुख-ऐश्वर्य में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में जलते घर देखना बीमारी परेशानी बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में जलता मुर्दा देखना किसी शुभ समाचार की प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में जहाज देखना किसी दुर्घटना में फंसने का संकेत है।
- स्वप्न में जादू देखना या करना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में जाल मकडी का देखना शुभ संकेत है। मछली का दिखे तो संकट से ग्रस्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में जामुन देखना महत्वपूर्ण यात्रा जाने का संकेत है।
- स्वप्न में जुलूस देखना नौकरी में पदोन्नत्ति मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में जूते से पीटते देखना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में जेब खाली देखना अशुभ संकेत है
- स्वप्न में जेब भरी देखना अधिक खर्च होने का संकेत है।
- स्वप्न में जेल देखना मान-सम्मान की हानी होने का संकेत है।
- स्वप्न में जेल से छूटते देखना किसी कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में जोकर देखना समय की बर्बादे होने का संकेत है।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

***
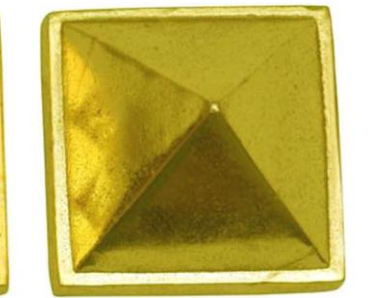
अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 6 स्वामी शुक्र

मूलांक 6

स्वामी ग्रह:- शुक्र

मित्र अंक-:- 5, 8

शत्रु अंक:- 1, 7

सम:- 3, 9

स्व अंक:- 6

तत्व:- जल

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 6, 15 व 24 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 6 होता है।

मूलांक 6 अंक के व्यक्ति अधिक कला प्रेमी और मनोरंजन प्रिय विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति की प्रकृति कला क्षेत्र में अधिक रुचिपूर्ण होती हैं।

मूलांक 6 का स्वामी ग्रह शुक्र हैं, इस लिए मूलांक 6 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर शुक्र का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 6 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर शुक्र ग्रह की अनुकूलता के कारण शुक्र ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। शुक्र ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति दिर्धायु, स्वस्थ, सबल, हंसमुख एवं दूसरों को संमोहित करने का विलक्षण उनमें होता हैं। मूलांक 6 वाले व्यक्ति की प्रायः जन्मजात से ही कला के प्रति विशेष रूचि होती हैं, व्यक्ति का दूसरों के मुकाबले अधिक सुंदर दिखना और बने रहना इनका स्वाभाव होता हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति की भौतिक सुखों में अधिक रुचि होती हैं इस लिए व्यक्ति जीवन जीने का सही आनंद उठाते हैं। यदि जीवन के किसी मोड़ पर धन का अभाव हो तो भी व्यक्ति हृदय से उदार एवं नीतिज्ञ होते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति को दूसरों के सौन्दर्य, सुख एवं प्रगति से अधिक ईस्या होती हैं। कभी-कभी दूसरों को आगे निकलने की होड़ में और प्रतिस्पर्धा में व्यक्ति जिद्दी हो जाते हैं, व्यक्ति किसी भी किमत पर दूसरों से आगे निकलने के रासते खोजता हैं। जिसमें कभी-कभी अनुचित रास्ते अपनाते हैं और भारी नुकसान उठाते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति में दूसरों को अपनी और आकर्षित और प्रभावित करने की अद्भुत शक्ति होति हैं। व्यक्ति की बात करने की शैली अनूठी होती हैं जिस कारण व्यक्ति सामने वाले से अपना काम निकालने में माहिर होते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति का आकर्षक शरीर, नम्रवाणी, मोहक व्यक्तित्व तथा चेहरे की सौम्यता सफलता में विशेष सहायक सिद्ध होते हैं। इस लिए व्यक्ति प्रायः सभी क्षेत्र में लोकप्रिय होते हैं। मूलांक 6 वाले व्यक्ति से की संगति से लोग सुख-आनंद का अनुभव करते हैं। व्यक्ति की रुचि कला प्रेमी होने से यह लोग अभिनय, संगित, मनोरंजन, सौन्दर्य प्रधान इत्यादि पर अधिक धन व्यय करते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति को सुन्दर वस्त्र धारण करना और भौतिक सुख-साधनो से सुसज्जित मकान में रहना पसंद करते है।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति अपने पराये सभी से अपनी बात मनवाने पर अधिक जोर देते हैं, इन्हें अपनी प्रशंसा अधिक प्रिय होती हैं। व्यक्ति मिलनसार स्वभाव के होने के कारण आसानी से दूसरों के दिल में अपने लिये जगा बना लेते हैं, यहि कारण हैं की व्यक्ति शीघ्र अनजाने लोगों से मित्रता स्थापित कर लेते हैं जिससे इनके मित्रों के संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति अपने जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधन प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते हैं इसलिए निरंतर अपने सुख-साधनों को जुटाने और वृद्धि करने में ही लगे रहते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति का विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण अधिक होता हैं जिस कारण व्यक्ति के एक से अधिक प्रेम संबंध हो सकते हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति प्रेम संबंधों में आनंद खोजते हुवे जीवन यापन करते हैं। व्यक्ति कला प्रेमी होने के कारण कला के क्षेत्र को अपनी आमदनी का स्त्रोत भी बना सकते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार शुक्र ग्रह से प्रभावि जातक प्रेमी स्वभाव के होते हैं, व्यक्ति की शारीरिक सुख प्राप्त करने की तीव्र होती हैं इस कारण व्यक्ति शीघ्र विवाह करने के लिए तैयार होते हैं, यदि विवाह नहीं होता तो विवाह से पूर्व शारीरिक सुख प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। कभी-कभी व्यक्ति शारीरिक सुख प्राप्त करने हेतु उचित-अनुचित मार्ग अपना ने से पीछे नहीं रहतें।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति को मौज-मस्ति, खाने-पीने, घुमने-फिरने, भोग-विलास का अधिक शौक होता हैं, इसलिए उसका अधिक धन इस कार्य में खर्च हो जाता हैं। व्यक्ति यदि अपनी कमजोरीयों एवं आदतों पर नियंत्रण करले तो वह जीवन में उचे स्थान पर आसित हो सकते हैं एवं अच्छा मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं।

यदि व्यक्ति अपनी बुरी आदतों का गुलाम बन जाता हैं तो वह समाज में अपना बना बनाया नाम, पद, प्रतिष्ठा सब को मिट्टी में मिला देता हैं। लोग उस्से धृणा करने लगते हैं। इस लिए व्यक्ति को हमेशा अनुचित कार्य से दूर रहना चाहिए।

मूलांक 6 वाले व्यक्ति स्वतंत्रता प्रिय होते हैं इस लिए वह लोग जिन्दगी एवं कार्यक्षेत्र में किसी का अनुशासन या हस्तक्षेप पसंद नहीं करतें, व्यक्ति जिन्दगी को अपने अंदाज से जीने का प्रयत्न करते हैं।

शुभ दिन:

शुभ वर्ष 15,24,33,42,51,60,69,78 वां वर्ष हैं, तिथि 6,15,24 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में शुक्रवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्यः

व्यक्ति फेफड़ो के रोग से ग्रसित रहते हैं। नाक, कान, आँख, जीभ, दांत, अंगुली, नाखून, हड्डि, वीर्य संबंधि बीमारियां हुआ करती हैं। स्त्री को मासिक धर्म संबंधि रोग होते हैं। मूर्च्छा आना, अजीर्ण, नपुंसकता, ज्वर संबंधि रोग रहते हैं।

उपयुक्त आहार:

तरबूज, खरबूज, आम, सेब, नासपती, अनार, पालक, गाजर, फुलगोभी, इमली, अंजीर, अखरोट, गुलकंद आदि लाभदायक होते हैं।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति वासतु कला, षिल्पकार, डिजाईनर, संगीत, नाट्यकार, बागवानी, वस्त्र, अभिनेता, ईत्र, तेल, फूल,घड़ि, प्रिंटींग, इंजीलियर,, जवाहरात, सेवा, आभूषण, मिठाई, विदेषी मूद्रा, किसी भी प्रकार के खनिज खदान,

होटल, लेखन, प्रकाशन, कला, दासवृत्ति आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए अनुकूल दिशा पूर्व है। व्यक्ति के लिए हल्का नीला, आसमानी, हल्का पीला, गुलाबी रंग, भी उपयुक्त है, किन्तु काला, गहरा लाल रंग अशुभ सूचक है।

मूलांक 6 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- **मूलांक 6 हैं जिसके** स्वामी ग्रह शुक्र के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी अनामिका उंगली में हीरा या सफेद पुखराज अथवा शुक्र के उपरत्न जरकन, सफेद टोपाज आदि अपने सामर्थ्य के अनुशार धारण कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित स्फटिक गणेश, शुक्र यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

शुक्रवार का व्रत: शुक्र ग्रह को प्रसन्न करने हेतु शुक्रवार का व्रत किया जाता हैं। शुक्रवार का व्रत करने से व्यक्ति के सौंदर्य में वृद्धि होती हैं, गुप्त रोगोमें लाभ होता हैं, भोग-विलास कि चिज वस्तु में वृद्धि होती हैं। शुक्रवार का व्रत करने से शुक्र के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका **मूलांक 6** का स्वामी शुक्र हैं अतः शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए एक नंग 13 मुखी या 6 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 13 मुखी या 6 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 4 मुखी और 7 मुखी या 14 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- शुक्र वार:- शुक्रवार

शुक्र ग्रह कि शांति हेतु श्वेत रत्न, चाँदी, चावल, दूध, सफेद कपड़ा, घी, सफेद फूल, धूप, अगरबत्ती, इत्र, सफेद चंदन दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- व्यवसायीक कार्यो में विध्न-बाधाएं आरही हो तो 21 गुरुवार को गरीब ब्राम्हण को भोजन कराएं।
- अपाहिज व्यक्ति को दान दें।
- नौकरी से संबंधित परेशानी हो तो नियमीत पीपल में जल चढ़ाएं और कौए को मीठी रोटी डालें।
- रोजगार से संबंधित दिक्कत आरही हो तो माथे पर केसर का टीका लगाएं।
- भूमि-भवन से संबंधित विवाद को सुलझाने के लिए श्री गणेश कि आराधना करें।
- शिक्षा से संबंधित समस्या दूर करने के लिए गाय को हरा चारा खिलाएं।
- दांपत्य जीवन की परेशानीयां दूर करने के लिएं मंगलवार के दिन हनुमान मंदिर में शुद्ध घी का दो मुख वाला दीपक जलाएं और लाल फूल की माला चढ़ाएं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दु:खदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।
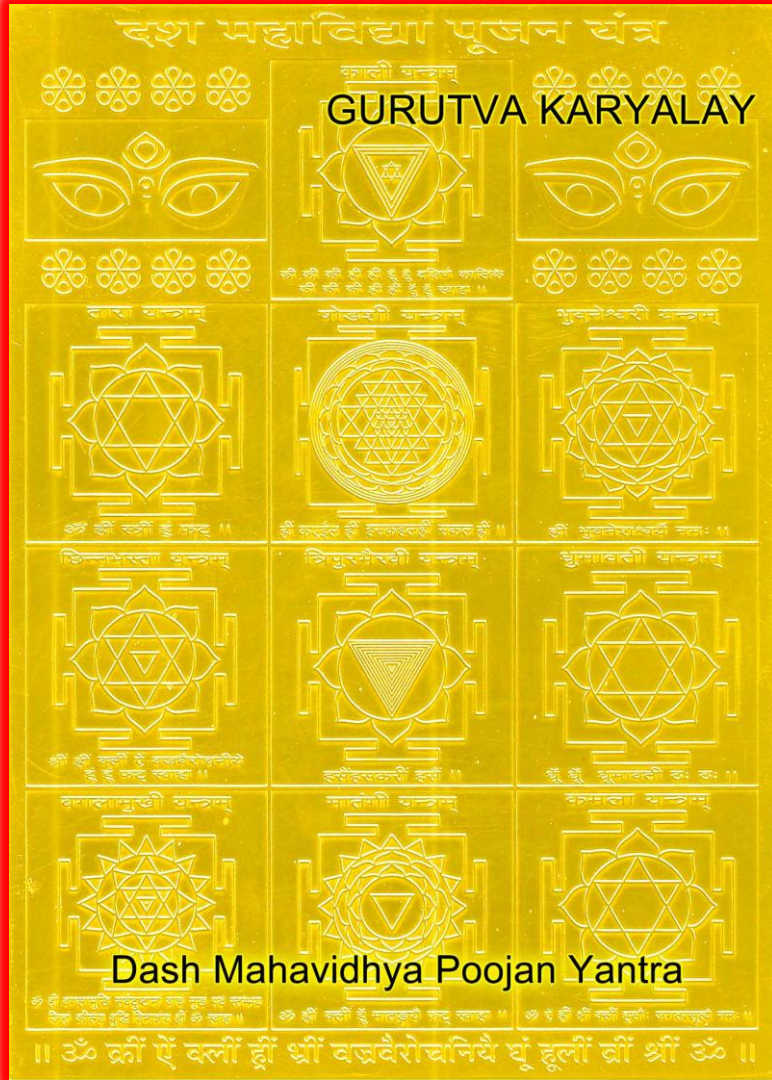
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित
22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **>> Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
25	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वितीया	08:59	मृगशिरा	13:25	साध्य	25:40	वणिज	17:14	वृषभ	02:19
26	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	तृतीया-चतुर्थी	03:57-25:23	आद्रा	11:36	शुभ	22:26	बव	14:40	मिथुन	-
27	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	22:55	पुनर्वसु	09:49	Shukla	19:15	कौलव	12:08	मिथुन	04:16
28	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	षष्ठी	20:36	पुष्य	08:08	ब्रह्म	16:10	गर	09:44	कर्क	-
29	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	सप्तमी	18:30	मघा	29:20	इन्द्र	13:14	विष्टि	07:31	कर्क	06:39
30	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अष्टमी	16:39	पूर्वाफाल्गुनी	28:17	वैधृति	10:29	कौलव	16:39	सिंह	-
दिसम्बर-2018													
1	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	नवमी	15:03	उत्तराफाल्गुनी	27:30	विषकुंभ	07:55	गर	15:03	सिंह	10:05

25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
25	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वितीया	08:59	सौभाग्यसुंदरी व्रत,
26	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	तृतीया-चतुर्थी	03:57-25:23	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (चं. उदय.रा.08:35)
27	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	22:55	वीड पंचमी (श्रीमनसादेवी), अन्नपूर्णामाता व्रत प्रारंभ (काशी), पुष्य दिन 01:24 से
28	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	षष्ठी	20:36	पुष्य दिन 11:33 तक
29	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	सप्तमी	18:30	रुकमणि व्रत-चंदोदयी
30	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अष्टमी	16:39	श्रीकाल भैरवाष्टमी व्रत (कालाष्टमी), कालभैरव दर्शन-पूजन, भैरवनाथ जयंती महोत्सव,
दिसम्बर-2018						
1	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	नवमी	15:03	-

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2018 -विशेष योग			
कार्य सिद्धि योग			
-	-	-	-
विघ्नकारक भद्रा			
25	संध्या 05:22 से २६ नवंबर प्रातः 04:06 तक (स्वर्ग)	31	रात 08:51 से 29 नवंबर प्रातः 07:47 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ……..………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………..……………………..	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………..…………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ……..……………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………..……………………….	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ……..………………………..	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……..………………………..	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ……..…………………..	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……..………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……..……………………...	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……..……………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……..………………..	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……..……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ……..…………………...	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ……..………………………..	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ……..…………………..	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ……..……………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……..…………………...	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……..…………………...	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……..……	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……..………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ……..………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ………….....	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……..……………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……..…………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ……..………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ……..………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..…………….	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ……..……………………...	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……..……………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……..………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..…………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..…………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………..	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..…………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………...	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………….	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………...…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...………….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..…………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..………………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………….	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..………………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………...…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..……………………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...………….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..………………………..	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ……………………………….	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	**(बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Weekly

25-Nov to 1-Dec 2018